पाढ़ा के पक्षी

Draft 2

पक्षियो को देख कर हमारे हृदय मे अनेक
भाव उठते है। मौसम के बदलते ही
अलग-अलग तरह के पक्षी आ जाते है
तो हमारे मन मे बहुत से सवाल
उठते है कि यह पक्षी कहाँ से
आए और क्यो आए। इसलिए हम
बहुत सारी रिसरच करने के बाद
यह किताब बनाई।

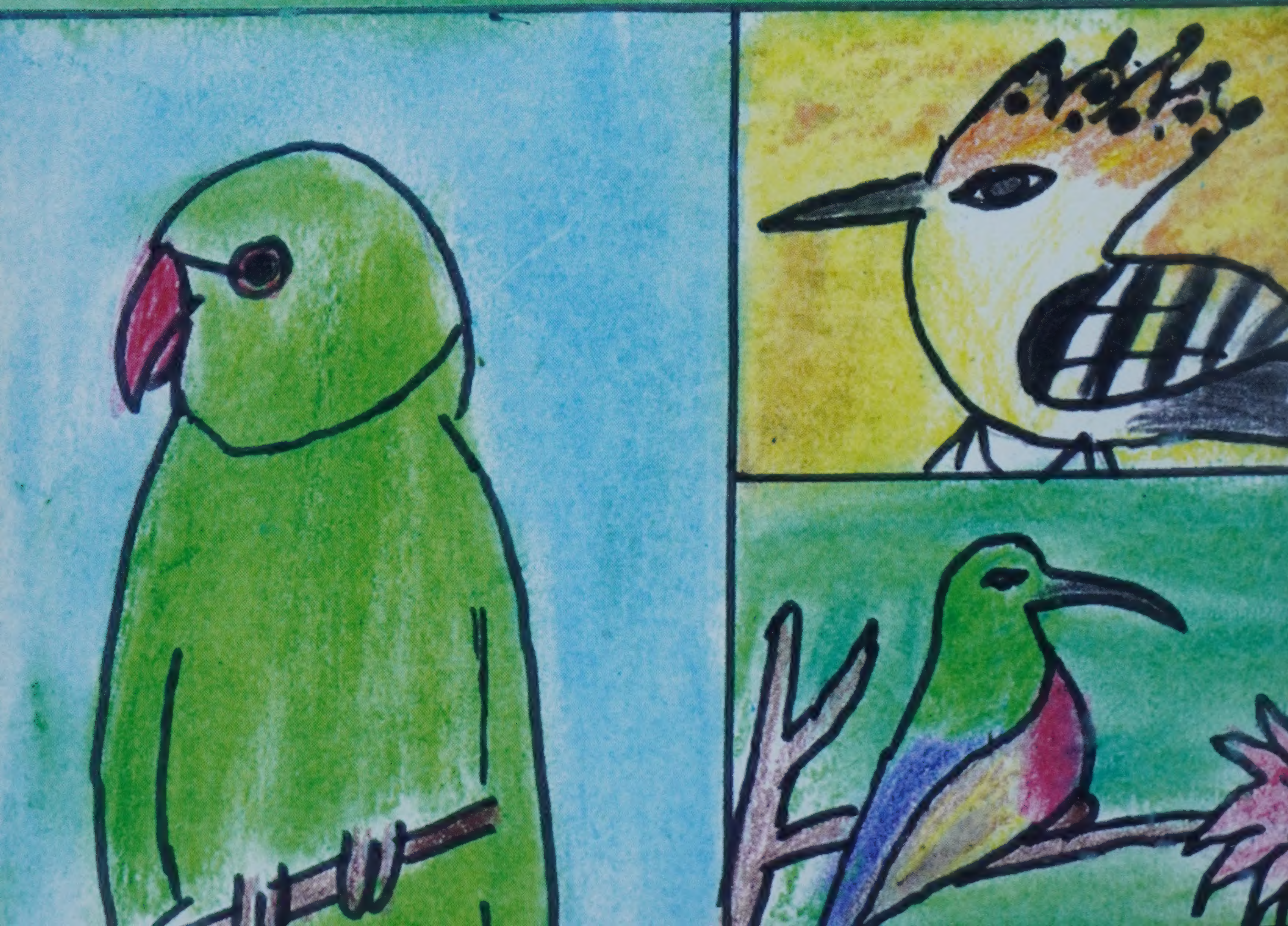

Contents

4-5	PREFACE • प्रस्तावना
6-7	परिचय
8-9	स्वीकृति
10-11	अध्ययन क्षेत्र
12-13	हमारी खोज के परिणाम
14-15	**फुदकी** ASHY PRINIA • BY ADITYA
16-17	**गजपाव** निवासी पक्षी BLACK WING STILT • BY YOGESH
18-19	**रंग बदलने वाला पक्षी** CATTLE EGRET • BY MAYANK
20-21	**मूरहेन** पेटू COMMON MOORHEN • BY ARCHIT
22-23	**मोहक** डरपोक पक्षी GREATER COCUAL • BY NAVYA
24-25	**स्लेटी अंजन** ध्यान्मगन पक्षी GREY HERON • BY HARSH
26-27	**कलवा कौआ** HOUSE CROW • BY VIREN
28-29	**रंगीन पनडुब्बी** LITTLE GREBE • BY NIKHIL
30-31	**अँधा बगुला** जादुई पक्षी POND HERON • BY SAMARDEEP
32-33	**बैंगनी जलमुर्गी** कीचड़ कि रानी PURPLE SWAMP HEN • BY PREET
34-35	**टिटहरी** टि-टि-टिटहरी RED-WATTLED LAPWING • BY KIYAN
36-37	**कबूतर** गुटरगूं PIGEON • BY MAYANK
38-39	**लिबर तोता** होशियार मिट्ठु ROSE-RINGED PARAKEET • BY NAMAN
40-41	**जलमुर्गी** घुमक्कड़ जलमुर्गी WHITE BRESTED WATER HEN • BY HANUSHIKA
42-43	**किलकिला** स्थिर पक्षी WHITE THROATED KINGFISHER • BY AVISH
44-55	BIRD SPECIES RECORDED AT PADHA VILLAGE
56-57	ABOUT DISHA INDIA COMMUNITY SCHOOL

Preface

This book is an outcome of a learning expedition for Grade 4 students of Disha India Community School, village Padha, Karnal. As part of the learning expedition, children explored and experienced different ecosystems of their village and developed an experiential understanding of ecosystems, habitats, food chain and food webs, and adaptation. They also developed the skills of observations, recording, illustration, and drawing inferences.

We, at Disha India, strongly believe that children learn better when teaching, and learning is connected to their context and immediate surroundings. It makes learning meaningful, engaging, and challenging. As an end product of the expedition, students made this book on birds of their village for the community. Having an authentic end product of an expedition makes learning even more meaningful and engaging. Designing a book for an authentic audience and purpose makes reading and writing inside the classroom relevant and rigorous, which is very much required in the present context.

Our vision is to use real-life experiences as a pedagogic medium for developing curricular concepts and skills. Learning through experiences not only develops a better understanding of the concepts but also helps children develop a systemic understanding of their context. The big idea is to prepare children for life through life...

प्रस्तावना

यह पुस्तक दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, ग्राम पाढ़ा, करनाल के ग्रेड 4 के छात्रों के सीखने के अभियान का परिणाम है। सीखने के अभियान के हिस्से के रूप में, बच्चों ने अपने गांव के विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों का पता लगाया और उनका अनुभव किया और पारिस्थितिक तंत्र, आवास, खाद्य श्रृंखला और खाद्य जाल और अनुकूलन की एक अनुभवात्मक समझ विकसित की। उन्होंने अवलोकन, रिकॉर्डिंग, चित्रण और निष्कर्ष निकालने के कौशल भी विकसित किए।

दिशा इंडिया में हम दृढ़ता से मानते हैं कि बच्चे तब बेहतर सीखते हैं जब शिक्षण और सीखना उनके संदर्भ और परिवेश से जुड़ा होता है। यह सीखने को सार्थक, आकर्षक और चुनौतीपूर्ण बनाता है। अभियान के अंतिम उत्पाद के रूप में, छात्रों ने समुदाय के लिए अपने गांव के पक्षियों पर इस पुस्तक को बनाया। किसी अभियान का प्रामाणिक अंतिम उत्पाद होने से सीखना और भी अधिक सार्थक और आकर्षक हो जाता है। एक प्रामाणिक दर्शकों और उद्देश्य के लिए एक किताब को डिजाइन करना, पढ़ना और लिखना अंदर से बनाता है।

हमारी दृष्टि पाठ्यचर्या संबंधी अवधारणाओं और कौशलों को विकसित करने के लिए एक शैक्षणिक माध्यम के रूप में वास्तविक जीवन के अनुभवों का उपयोग करना है। अनुभवों के माध्यम से सीखने से न केवल अवधारणाओं की बेहतर समझ विकसित होती है बल्कि बच्चों को उनके संदर्भ की व्यवस्थित समझ विकसित करने में भी मदद मिलती है। बड़ा विचार बच्चों को जीवन के माध्यम से जीवन के लिए तैयार करना है।

परिचय

पक्षी स्पष्ट रूप से कई पारिस्थितिक तंत्रों के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। वे खाद्य श्रृंखला के अभिन्न अंग हैं। उदाहरण के लिए एक वुडलैंड पारिस्थितिकी तंत्र में, कुछ पक्षी अपना भोजन मुख्य रूप से पौधों से प्राप्त करते हैं। अन्य मुख्य रूप से छोटे जानवरों को खाते हैं, जैसे कि कीड़े या केंचुए। पक्षियों और पक्षियों के अंडे, बदले में, लोमड़ियों, और सांप जैसे जानवरों के लिए भोजन का काम करते हैं। एक पारिस्थितिकी तंत्र में सभी जानवरों के बीच भोजन संबंध किसी एक प्रजाति को बहुत अधिक होने से रोकने में मदद करता हैं।

पक्षी कीड़े खाते हैं। वे बगीचों, खेतों और अन्य स्थानों पर कीटों को नियंत्रित करने का एक प्राकृतिक तरीका हैं। हवा में उड़ने वाले पक्षियों का एक समूह हर दिन सैकड़ों कीड़ों को आसानी से खा सकता है। कीट खाने वाले पक्षियों में कोतवाल, मैना, टिटहरी और कठफोड़वा शामिल हैं।कई फल खाने वाले पक्षी बीजों को फैलाने में मदद करते हैं। फल खाने के बाद, वे बीज को अपनी आंतों में ले जाते हैं और नए स्थानों पर जमा करते हैं। फल खाने वाले पक्षियों में तोता, कोयल, फिंच और बसंता शामिल हैं।

आप शायद पक्षियों से भोजन के रूप में परिचित हैं। भोजन के लिए लोगों ने हमेशा पक्षियों का शिकार किया है। लोगों को अंततः पता चला कि कुछ जंगली मुर्गी (बतख, मुर्गियाँ, टर्की) को पालतू बनाया जा सकता है। लगभग 3,000 साल पहले एशिया में मुर्गियों को पालतू बनाया गया था। किसान मांस और अंडे के लिए मुर्गी पालते हैं। हम पक्षियों से टीम वर्क, एकाग्रता, कड़ी मेहनत, धैर्य और संसाधन प्रबंधन जैसी कई चीजें सीख सकते हैं इसके अलावा पक्षियों

के व्यवहार या आकार के आधार पर प्रौद्योगिकियों में नए नवाचारों का निर्माण किया गया है। हमें पक्षियों की विविधता और आबादी की निगरानी करते रहने की जरूरत है क्योंकि पक्षी स्वस्थ पर्यावरण के संकेतक हैं।

स्वीकृति

हम इस एक्सपीडिशन को सफल बनाने में अपने स्कूल का धन्यवाद करते है। हमारे एक्सपीडिशन के मार्गदर्शक श्री परमिंदर सर, आशीष सर और समीर सर रहे। इस एक्सपीडिशन की शुरुआत में हम सबसे पहले 4 दिन के लिए सुल्तानपुर नेशनल पार्क गये वहाँ पर समीर सर ने हमे प्राकृतिक आवासों के बारे में अवगत कराया और एक पक्षी कैसे इन आवासों में रहता है और हमे बताया कि कैसे उसके पंजे उसकी चोंच, उसका रंग उसको अपने आवास में रहने में मदद करता है। समीर सर ने हमे इस कार्य को उत्साह और बारीकी से काम करने की प्रेरणा दी। हम आशीष सर का बहुत धन्यवाद करते है उन्होंने हमे सजीव और निर्जीव चीजों के बारे में बताया और पत्ते कैसे खाना बनाते है उसके बारे में हमे विस्तार से समझाया।

उसके बाद हमने गाँव में आकर अपने गाँव के पक्षियों का अध्ययन किया और इस कार्य में अरविंदर सर और विशाल सर ने हमारा मार्गदर्शन किया। हमने गाँव के सभी आवासों का दौरा किया और रिपोर्ट बनायीं की किस आवास में कौन से पक्षी रहते है। हम Auro सर, विशाखा मैडम और अनुराग सर का धन्यवाद करते है जिन्होंने ड्राइंग (पक्षियों के चित्र) बनाने में हमारी मदद की।

हम अरविंदर सर और डिंपल मैडम का धन्यवाद करते है जिन्होंने हर कदम पर हमारा साथ दिया और हमे निरंतर सीखने की प्रेरणा दी। डिंपल मैडम ने हमे समझाया की भाषा की दृष्टि से किसी पक्षी के बारे में कैसे लिखना है और भाषा में सुधार करने के लिए हमेशा प्रेरित किया।

हम अपने गाँव के बजुर्गो का धन्यवाद करते है जिन्होंने हमेशा हमे अच्छा कार्य करने के लिए

प्रोत्साहित किया और जब भी हम उनसे गाँव के बारे में या पक्षियों के बारे में पूछते थे तो सभी बहुत ख़ुशी-ख़ुशी हमे उत्तर देते थे। हम अपने गाँव के सरकारी स्कूल और गाँव के मंदिर का बहुत आभार प्रकट करते है की जिन्होंने बहुत से पेड़ों को बचा कर रखा हुआ है और नए-नए पेड़ पौधे भी लगा रखे है। इन सभी पेड़ों पर बहुत से पक्षी अपना आवास बना कर रहते है। हम अपनी रिसर्च के लिए मंदिर और स्कूल में बहुत बार गये वहाँ से जुड़े लोगो ने हमारा बहुत सहयोग किया।

अध्ययन क्षेत्र

गाँव के बारे में

गाँव पाढ़ा जिला करनाल से 30 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्तिथ है। गाँव की कुल आबादी 6200 के करीब है और तक़रीबन 1000 घर हैं। यह मुख्यतः कृषि प्रधान गाँव है और यहाँ की मुख्य फसल गेहूँ, धान, गन्ना इत्यादि है।

यहाँ पर खेती बारिश और भूमिगत जल पर निर्भर है। अभी गावं में भूमिगत जल का स्तर 25 मीटर के करीब है और यह निरंतर नीचे जा रहा है। खेती के साथ-साथ सभी लोग पशुपालन भी करते हैं।

हमने अपनी खोज की दौरान पाया की ये तीनों आवास मिलकर लगभग 70 प्रजातियों के पक्षियों को रहने में और जीवन जीने में मदद करते हैं। इन पक्षियों में कुछ प्रवासी पक्षी, जैसे की PAIED AVOCET, RUFF, REDSHANK, COMMON COOT, AND COMMON KINGFISHER भी है। इस प्रकार हमारा गाँव भी विश्व के विभिन्न पारिस्थितक तंत्र को बनाये रखने के लिए कहीं न कहीं अपना योगदान दे रहा है।

WETLAND

गाँव में 4 WETLAND है और उनमे से एक WETLAND में जलखुम्बी का विस्तार देखा जा सकता है।

FARMLAND

गाँव के चारो तरफ FARMLAND हैं जिसमे मौसम के अनुरूप फसल उगाई जाती है। गर्मियों में मुख्यत्त धान और ज्वार और सर्दियों में गेहूँ और बरसीम उगाई जाती है। मौसम के अनुरूप सब्जियाँ भी उगाई जाती है।

PLANTATION

गाँव में पेड़ पौधे मुख्यत सरकारी स्कूल के परिसर में और गाँव के मंदिर के आस-पास हैं। गाँव के अन्दर और खेतो में भी पेड़ पौथों की बहुत कमी है।

हमारी खोज के परिणाम

सुल्तानपुर पक्षी अभयारण्य में हमारी 4 दिवसीय कार्यशाला थी जिसमें हमने दिसंबर 2021 के महीने में पक्षियों के प्राकृतिक आवास और पक्षियों की पहचान के बारे में सीखा। जनवरी से हमने अपने गाँव में अलग-अलग आवासों की पहचान की और प्रत्येक आवास में पक्षियों की प्रजातियों की गिनती शुरू की। हम जनवरी से मार्च तक प्रत्येक आवास में पक्षियों की प्रजातियों की गिनती कर रहे हैं। विभिन्न आवासों से कुल 70 प्रजातियां (Fig 1) दर्ज की गई हैं, वेटलैंड (53 प्रजातियां) से अधिकतम संख्या में प्रजातियां दर्ज की गई हैं जिनमें इंडियन स्पॉट-बिल डक, ब्लैक-विंग-स्टिल, कॉमन सैंडपाइपर, पॉन्ड हेरॉन, कॉमन किंगफिशर, लिटिल ग्रीबे, कॉमन कूट, इंटरमीडेट एग्रेट, और पर्पल स्वैम्पेन शामिल हैं। कृषि क्षेत्र में हमें 36 प्रजातियां मिलीं, ये प्रजातियां हैं ब्राउन रॉक चैट, ब्लैक ड्रोंगो, ग्रेटर कौकल, रेड-वेंटेड-बुलबुल, इंडियन पीफॉवल, रोज रिंगेड पैराकीट, एश प्रिनिया, कॉमन हूपो, इनिडान सिल्वरबिल, और ग्रीन बी-ईटर, वृक्षारोपण क्षेत्र में हमने कुल 31 प्रजातियां दर्ज की हैं, ये प्रजातियां हैं ओरिएंटल मैगपाई रॉबिन, कॉमन टेलरबर्ड, शिकारा, कॉपरस्मिथ बारबेट, ग्रे हेरोनबिल और येलो फुटेड ग्रीन पिजन।

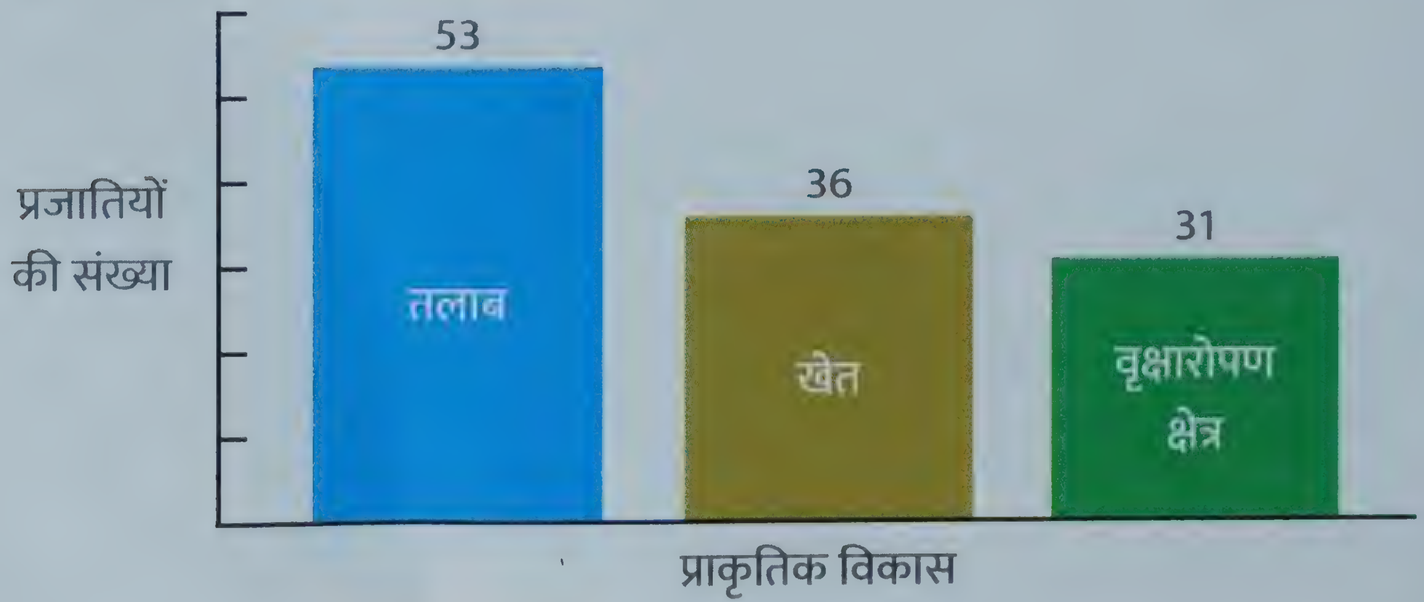

फुदकी

ASHY PRINIA

Aditya

• • • इस छोटी सी चिड़िया का नाम ASHY PRINIA है। हिंदी में इसको फुदकी कहते हैं। मैंने इसको फुदकती चिड़िया का नाम दिया है। मैंने इसको यह नाम इसलिए दिया है क्योंकि यह सारा दिन फुदकती रहती है।

यह 13-14 सेंटीमीटर की होती है। इसके शरीर का रंग भूरा होता है और इसकी चोंच का रंग काला होता है। इसके सिर के ऊपर से लेकर पंखो तक का रंग राख जैसा होता है। इसकी पूंछ का रंग और पेट का रंग भी भूरा होता है। इसकी टांगें लंबी और पतली होती हैं तथा हल्के गुलाबी रंग की होती हैं। उसके पंजो का रंग भी हल्का गुलाबी होता है। इसकी आँखें बटन जैसी गहरी लाल होती हैं। इसका सिर गोल होता है। पंख लम्बे होते हैं। हमारे गाँव में यह अधिकतर सभी आवासों में पाई जाती है। जहाँ पर भी इसको 4-5 फीट तक की झाड़ी मिलती है, यह वहां घोंसला बनाती है। यह छोटी उडान लेती है तथा वृक्ष या घास पर चढ़ती रहती है। वह अधिकतर अकेले पाई जाती है। तीव्र ध्वनी में इसकी आवाज़ च्यु-च्यु-च्यु है।

BEAK & CLAWS

इसकी चोंच छोटी और नुकीली है। यह मकड़ी के जाल मे फसे कीड़े, फूल और पत्तो में से कीड़े निकालकर खाती है। इसमें इसकी छोटी और नुकीली चोंच काम आती है।

इसके पंजे की तीन उँगलियाँ आगे की ओर होती हैं और एक उंगली पीछे होती है। इसके नाखुन बहुत नुकीले होते हैं और इनसे यह घास पकड़ सकती है और फुदक फुदककर पेड़ पर चढ़ जाती है।

नए शब्द व उनके अर्थ

तीव्र ध्वनि - तेज आवाज़

आधिकतर - ज्यादातर

नुकीला - तीखे

गजपाव

निवासी पक्षी

BLACK WING STILT

Yogesh

• • • मेरे पक्षी का नाम गजपाव है। मैने उसे निवासी पक्षी का नाम दिया है क्योंकि यह बारह महीने हमारे गाँव में रहता है।

गजपाव पतला, काले और सफेद रंग का पक्षी है। यह गंदे पानी में और तालाब के किनारे शिकार करता है। इन पक्षियों में नर और मादा दोनों लगभग एक जैसे होते हैं पर रंग में थोडा अंतर होता है। नर की पीठ का रंग गहरा काला और पूंछ का रंग भूरा होता है। जिससे नर और मादा का पता चलता है। यह उत्तर भारत का बारहमासी पक्षी है।यह कीचड़ में छोटे घोंघे, कीड़े, मछली का शिकार करता है। इस पक्षी की संख्या सर्दी में ज्यादा होती है।

BEAK & CLAWS

गजपाव की चोंच का रंग काला होता है। इसकी चोंच बहुत पतली होती है। जब यह अपनी चोंच खोलता है इसकी चोंच चिमटे जैसी दिखती है। इसकी चोंच आगे से बहुत नुकीली होती है। जो इसे पानी में से कीड़े छाटने में और खाने में मदद करती है।

गजपाव के पंजो का रंग हल्का गुलाबी होता है। इसके पंजो में तीन उँगलियाँ होती है। तीनो उँगलियाँ आगे की तरफ होती हैं। उसकी उँगलियों के नाखुन नुकीले होते हैं। नाखुन का रंग काला होता है। इसकी पतली और लंबी उँगलियाँ इसे कीचड़ में चलने में मदद करती हैं।

रंग बदलने वाला पक्षी

CATTLE EGRET

Mayank

• • • मेरे पक्षी का नाम CATTLE EGRET है। मैने इसे रंग बदलने वाला पक्षी कहा है क्योंकि इसका रंग गर्मी में अलग और सर्दी में अलग होता है। सिर्फ नर पक्षी का रंग बदलता है परंतु मादा पक्षी का रंग नही बदलता।

BEAK & CLAWS

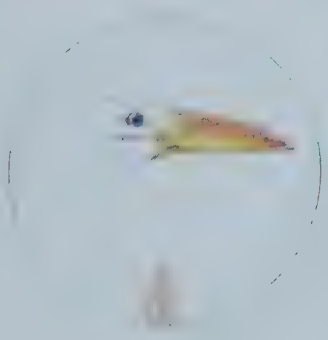

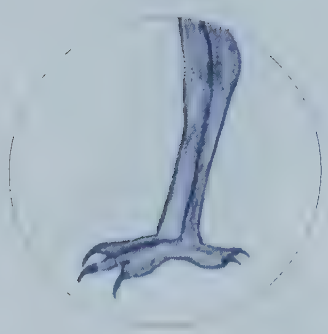

यह लगभग 40 सेंटीमीटर का होता है। इसकी आँखें छोटी और गोल होती हैं। आँख के अन्दर का हिस्सा पीला और बीच में काले रंग की पुतली होती है। इसकी गर्दन का आकार S जैसा होता है। यह छोटी मछली और कीड़े खाता है। यह हमारे गाँव में तालाब के पास, खेतो में और पेड़ों पर बैठा हुआ दिखाई देता है। इसकी आवाज़ कर्कस कें-कें होती है। यह ज्यादातर समूह में पाया जाता है। इसके पंजो का रंग काला होता है।

इसकी चोंच का रंग हल्का पीला और नारंगी होता है। इसकी चोंच

पीछे से सीधी और आगे से मुड़ी हुई और नुकीली होती है। इसकी चोंच इसे छोटी मछली पकड़ने और कीड़े खाने में मदद करती है। यह अपनी चोंच की मदद से अपना घोंसला बनाता है। इसकी चोंच इसे खुजली करने में भी मदद करती है।

इसके पजों का रंग काला होता है। इसकी टांगें पतली और लंबी होती हैं। इसके पंजे चौड़े होते हैं और इनके पजों की तीन उँगलियाँ आगे कि तरफ और एक उंगली पीछे की तरफ होती है। सभी उँगलियाँ लगभग बराबर होती हैं जिससे की यह पक्षी कीचड में आराम से चल सकता है। इसके पंजो का आकार इसे पेड़ों पर बैठने में और चलने में मदद करता है।

मूरहेन

पेटू

COMMON MOORHEN

Archit

• • • मेरे पक्षी का नाम मूरहेन है। मैंने इसका नाम पेटू रखा है क्योंकि यह बहुत खाता है।

इसे पक्षियों की आवाज़ पर ही खतरे का पता चलता है। यह लगभग 38 सेंटीमीटर का होता है। यह एक बार में 6 से 8 अंडे देती है। यह अपने अंडे ज़मीन पर ही देती है। इसका रंग काला व सफेद होता है। यह हमारे गाँव में उस तालाब पर मिलता है जहाँ पर बहुत जल्खुम्बी है। यह एक निवासी पक्षी है यह हर समय गाँव में ही रहता है। यह पानी की घास, फूल, कीड़े और फल खाती है।

BEAK & CLAWS

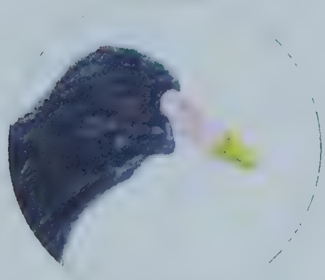

मूरहेन की चोंच के आगे का हिस्सा पीला होता है और चोंच के पीछे का हिस्सा माथे तक लाल होता है। इसकी चोंच आगे से नुकीली और पतली होती है। इसकी चोंच इसे पानी की घास और कीड़े खाने में मदद करती है। इसकी चोंच दूसरे पक्षियों की अपेक्षा छोटी होती है। इसकी चोंच 1 या 2 सेंटीमीटर की होती है।

मूरहेन के पंजो का रंग हल्का हरा होता है। इसके पंजो की उँगलियाँ लंबी होती हैं। तीन उँगलियाँ आगे की तरफ होती हैं और एक उंगली पीछे की तरफ होती है। उँगलियों के आगे नुकीले नाख़ून होते हैं। इसके चौड़े पंजे इसे पानी व दल-दल में चलने में सहायता करते हैं।

मोहक

डरपोक पक्षी

GREATER COCUAL

Navya

• • • मेरे पक्षी का नाम GREATER COUCAL है। मैने इसे डरपोक पक्षी इसलिए कहा है क्योंकि यह पक्षी बहुत डरता है।

यह लगभग 38 सेंटीमीटर का होता है। यह ज्यादातर खुले भागो तथा मैदानों में पाया जाता है। यह कौए के बराबर होता है। उसके सिर के नीचे का भाग बैगनी रंग का होता है और आँखें गहरी लाल होती हैं। इसकी पूंछ पर सफेद रंग की पट्टियाँ होती हैं। यह कभी-कभी ऊक-ऊक बोलता है और ज्यादातर कुप-कुप बोलता है। इसका भोजन टिड्डे, भुजंगे, लारवा, जंगली चूहे, बिच्छु, गिरगिट, छिपकली इत्यादि होते हैं।

BEAK & CLAWS

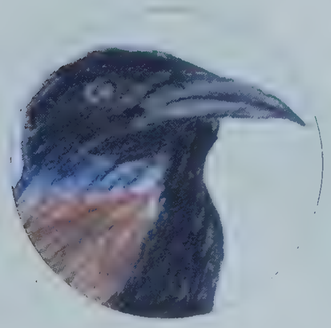

इसकी चोंच का रंग फीका काला होता है। इसकी चोंच इसे खाना खाने में, अपने बच्चो को खाना खिलाने में और अपना घोंसला बनाने में मदद करती है। जब यह अपना घोंसला बनाता है तो अपनी चोंच में घोंसला बनाने का सारा सामान इकट्ठा करता है। इसके बाद वह

जाकर अपने घोसले में लगा देता है। इसकी चोंच आगे से नुकीली नहीं होती क्योंकि इसे मिट्टी के कीड़े खाने होते है।

GREATER COCUAL के पंजो का रंग स्लेटी और काला होता है। इसके पंजो की तीन उँगलियाँ आगे कि तरफ होती हैं और एक उंगली पीछे कि तरफ होती है। इसके पंजो के नाखुन बहुत बड़े होते हैं। इसके पंजे इसे पेड़ों पर बैठने के लिए तथा मैदानों में चलने में मदद करते हैं। इसके पंजे इसे शिकार करने में भी मदद करते हैं।

स्लेटी अंजन

ध्यानमग्न पक्षी

GREY HERON

Harsh

• • • मेरे पक्षी का नाम GREY HERON है। मैने इसे ध्यानमग्न पक्षी इसलिए कहा है क्योंकि वो एक जगह ध्यान लगाकर बहुत देर तक खड़ा रहता है।

यह ज्यादातर पानी और कीचड़ के पास पाया जाता है। यह बगुले से बड़ा होता है। उसकी आवाज़ कर्कश होती है। वह बहुत कम आवाज़ निकालता है। उसकी गर्दन का आकार S जेसा होता है। ये पक्षी पेड़ों पर बहुत कम बैठता है। ये हमारे गाव में बहुत कम पाया जाता है। यह पक्षी ज्यादातर मछली खाता है। उसकी आँख गोल होती है। उसकी आँख अंदर से पीली और काली होती है। उसकी टांगें लंबी होती हैं। यह बहुत देर तक एक टांग पर खड़ा रहता है।

BEAK & CLAWS

उसकी चोंच नारंगी रंग की होती है। उसकी चोंच 5 या 6 सेंटीमीटर की होती है। उसकी चोंच के बीच के भाग में दो छेद होते हैं। इसके चोंच बहुत मजबूत होती है। इसकी चोंच सीधी ओर नुकीली होती

है। इसकी लंबी और नुकीली चोंच इसको मेंढक, मछली, कीडे आदि खाने में मदद करती है। यह अपनी चोंच से अपने शिकार को पकड़कर उसे पटककर मारकर खाता है।

उसके पंजे काले और बहुत बड़े होते हैं। वह अपने पंजो के सहारे दौड़ता है। उसके पंजे बहुत मजबूत होते हैं। वह अपने पंजो से पेड़ पर बैठता है। उसकी तीन उँगलियाँ आगे और एक उंगली पीछें की तरफ होती है। इसके पंजे इसको घोंसला बनाने में मदद करते हैं।

कलवा कौआ

HOUSE CROW

Viren

• • • मेरे पक्षी का नाम HOUSE CROW है। मैने अपने पक्षी का नाम कलवा कौआ रखा है। मैने अपने पक्षी का नाम यह इसलिए रखा है क्योंकि इस पक्षी का रंग पुरा काला होता है।

मेरे पक्षी की लंबाई लगभग 32 सेंटीमीटर होती है। कौआ एक निवासी पक्षी है, वो यहाँ पर सालभर रहता है। वो लगभग 10-15 साल जीता है। उसकी चोंच में दो छेद होते हैं, वो उनके द्वारा साँस लेता है। उसकी पूंछ उसे दिशा बदलने में मदद करती है। इसकी आँख गोल होती है और आँखों का रंग काला होता है।इसका मुख्य स्थान वृक्ष है। जब इसको खतरे का अहसास होता है, तो वह कांव-कांव-कांव करता है। यह पक्षी ज्यादातर समूह में पाया जाता है। यह पक्षी सर्वाहारी है। इस पक्षी को हमारे गाँव में काग भी कहते है।

BEAK & CLAWS

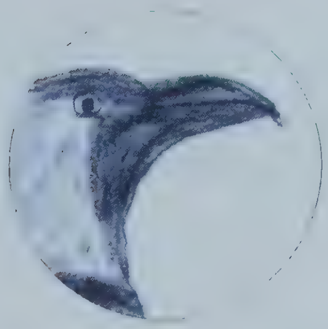

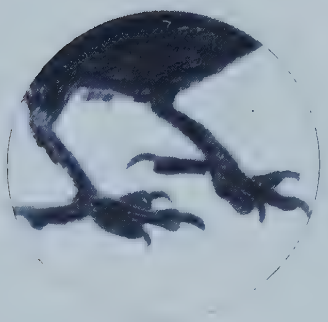

इसके पंजे बहुत मजबूत होते हैं।इसके पंजो की तीन उँगलियाँ आगे

होती हैं और एक उंगली पीछे होती है। इसके पंजो के आगे नुकीले नाखुन होते हैं। इसके मजबूत पंजे इसको मांस या रोटी को लेकर उड़ने में मदद करते हैं।इसके पंजो और टांगो में काली धारियां होती हैं।

इसकी चोंच का रंग काला होता है। इसकी चोंच आगे से नुकीली होती है। इसकी चोंच इसे मांस खाने और मांस को चीरने-फाड़ने में मदद करती है। कौए की ऊपर वाली चोंच बड़ी होती है और नीचे वाली चोंच छोटी होती है। इसकी चोंच इसे तिनके इकट्ठा करके घोंसला बनाने में मदद करती है।

रंगीन पनडुब्बी

LITTLE GREBE

Nikhil

• • • मेरे पक्षी का नाम LITTLE GREBE है। मैने इस पक्षी को रंगीन पनडुब्बी का नाम दिया है। मैने यह नाम इसलिए दिया है क्योंकि पनडुब्बी में 4-5 रंग होते हैं।

यह पक्षी लगभग 20-25 सेंटीमीटर का होता है। पनडुब्बी अंडे के आकार की होती है। पनडुब्बी का जीवनकाल लगभग 10-15 साल का होता है। उसके सिर का रंग काला होता है, उसकी पीठ का रंग काला और भूरा होता है, उसके पंख काले होते हैं और आँखें लाल और काली होती हैं। पनडुब्बी तर-तर-तर बोलती है। यह मछलियां, काई और कीड़े खाती है। उसका आवास पानी है। पनडुब्बी को हम पूरे साल देख सकते हैं। बरसात में उसके बच्चे देखने को मिलते हैं।

BEAK & CLAWS

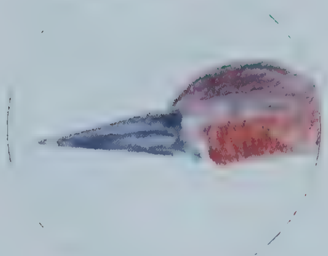

पनडुब्बी की चोंच का रंग थोडा सफ़ेद और स्लेटी होता है। उसकी चोंच सीधी होती है। उसकी चोंच लगभग तीन से चार सेंटीमीटर

लंबी हो सकती है। उसकी चोंच उसे छोटी मछलिया और वनस्पति खाने में मदद करती है।

पनडुब्बी के पंजो का रंग काला होता है। उसके पंजो के बीच में जाल लगा होता है जिससे उसको तैरने में सहायता मिलती है और जालीदार पंजो से उसको गोता लगाने में भी सहायता मिलती है। पंजो के इस आकार के कारण वह पानी पर भाग सकती है।

अँधा बगुला

जादुई पक्षी

POND HERON

Samardeep

• • • मेरे पक्षी का नाम अँधा बगुला है। मैंने इस पक्षी को जादुई पक्षी का नाम इसलिए दिया है क्योंकि यह पक्षी सूखी घास और मिट्टी पर मुश्किल से दिखाई पड़ता है।

BEAK & CLAWS

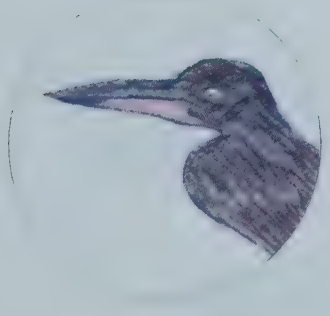

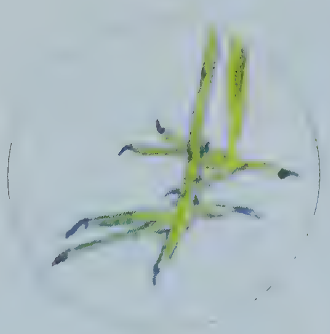

इसका रंग भूरा होता है। इसकी पीठ पर काले रंग की धारियां होती है। अंधे बगुले की आँखें गोल और पीले रंग की होती है। इसकी टांगो का रंग हल्का पीला और हरा होता है। यह पक्षी तालाब, दल-दल और कम पानी वाली जगह पर रहता है। यह एक निवासी पक्षी है। ये मछली, मेंढक और छोटे सांप खाता है। यह मुहं बंद करके गले से आवाज़ निकालता है। ये उक-उक की आवाज़ निकालता है। यह लगभग 42 सेंटीमीटर का हो सकता है।

इसकी चोंच लगभग 4 -6 सेंटीमीटर लंबी हो सकती है। अंधे बगुले

की चोंच का रंग ऊपर से काला और नीचे से पीला होता है। इसकी चोंच सीधी और आगे से तीखी होती है। इस पक्षी की चोंच उसे मछली पकड़ने में और घोंसला बनाने में मदद करती है।

इसके पंजे चोडे और फैले हुए होते है। अंधे बगुले के पंजो में तीन उँगलियाँ आगे होती है और एक ऊँगली पीछे होती है। आगे वाली उँगलियाँ पीछे वाली ऊँगली से लंबी होती है। उँगलियों के आगे वाले हिस्से में नाखुन होते है जोकि बहुत नुकीले होते है। इसके पंजे इसको शिकार करने में मदद करते है। यह अपने शिकार को पंजो में दबाकर खाता है।

बैंगनी जलमुर्गी

कीचड़ कि रानी

PURPLE SWAMP HEN

Preet

• • • मेरे पक्षी का नाम बैंगनी जलमुर्गी है। मैंने इसका नाम कीचड़ की रानी रखा है। यह नाम मैंने इसलिए रखा है क्योंकि मैंने इसको जब भी देखा है यह कीचड़ में ही मिलती है।

BEAK & CLAWS

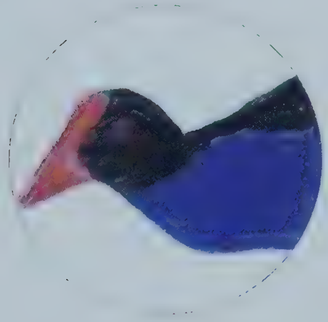

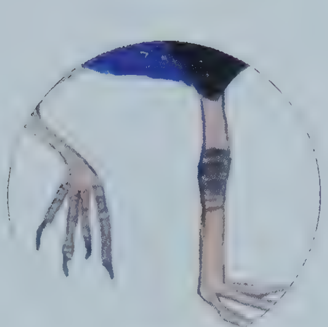

यह ज्यादातर दलदल वाले स्थान पर मिलती है। यह हमारे गावं में उस तालाब में मिलती है जहाँ पर जल्खुम्बी फैली हुई है। इसकी पीठ बैंगनी रंग की होती है। इसकी गर्दन और छाती नीले रंग की होती है और पूंछ का नीचे वाला हिस्सा सफ़ेद रंग का होता है। इसकी टांगो का रंग नारंगी होता है। यह अपनी पूंछ को बार बार ऊपर नीचे घुमाती रहती है। यह भारी पक्षी होने के बावजूद अच्छी उड़ान भरती है। यह पानी के किनारे झाड़ियों में रहती है और छोटे जानवर खाती है जैसे मेढक, कीड़े, सांप और पत्ते खाती है। यह छोटे समूह में पाई जाती है। इसकी आँख छोटी और गोल होती हैं और इसकी आँख का रंग लाल

होता है तथा उसमे एक काले रंग का बिंदु होता है।

इसकी चोंच लाल रंग की होती है। चोंच और माथे का रंग एक जैसा होता है और चोंच के नीचे का रंग स्लेटी होता है। इसकी चोंच बहुत मज़बूत और नुकीली होती है। इसकी चोंच चीरने फाड़ने में काम आती है। इसकी चोंच में दो छेद होते हैं जो इसे सांस लेने में मदद करते हैं। यह अपनी चोंच की मदद से घोंसला बनाती है।

इसके पंजो का रंग हल्का लाल होता है और इसके पंजे बड़े और फैले हुए होते हैं। इसके पंजो की उँगलियाँ लंबी होती हैं। तीन लंबी ऊँगली आगे की तरफ होती हैं और एक छोटी ऊँगली पीछे की तरफ होती हैं। उँगलियों के आगे काले रंग के तीखे नाख़ून होते हैं। इसके पंजे इसको कीचड़ में और जमीन पर चलने में मदद करते हैं।

टिटहरी

टि-टि-टिटहरी

RED-WATTLED LAPWING

Kiyan

• • • मेरे पक्षी का नाम LAPWING है। मैने उसका नया नाम टि-टि टिटहरी उसकी आवाज़ और उसका नाम जोडकर रखा है।

वह लगभग 22 सेंटीमीटर की होती है। उसके नर और मादा में कोई फर्क नहीं होता। दोनों का रंग रूप एक जैसा होता है। इसकी गर्दन का रंग नीचे और ऊपर से काला और बराबर से सफेद होता है। इसके पंखो का रंग भूरा होता है। इसकी पूंछ का रंग आधा काला और आधा भूरा होता है। यह पक्षी हमारे गाँव में पानी के पास और खेत में पाया जाता है। यह अपने अंडे जमीन पर घोंसला बनाकर देती है। इसकी आँख गोल और छोटी होती है। आँखों के बीच वाला हिस्सा काले रंग का होता है। जब इसको किसी से खतरे का अहसास होता है तब यह अपनी आवाज़ बदल लेती है। यह निवासी पक्षी है और पुरे साल गाँव में ही मिलती है।

BEAK & CLAWS

LAPWING की चोंच का रंग आधा काला और आधा लाल होता है। LAPWING की चोंच लगभग 1.5 सेंटीमीटर की होगी। इसकी चोंच नुकीली होती है और आगे से मुड़ी होती है। यह अपनी नुकली चोंच की मदद से कीड़े खाती है। उसकी चोंच छोटी होती है। जब वह अपना घोंसला बनाती है तब वह अपनी चोंच से मिट्टी खोदती है।

LAPWING के पंजो का रंग पीला होता है। LAPWING के पंजे लगभग 10 सेंटीमीटर के होंगे। जब LAPWING उडती है तब उसके पंजे सीधे हो जाते हैं और जब वह चलती है तब उसके पंजे मुड़ते हैं। उसके पंजे उसे कम पानी और कीचड़ में चलने में मदद करते हैं। उसके पंजो कि बनावट ऐसी है जिससे वो कीचड़ और पानी में चल सकती है।

कबूतर

गुटरगूं

PIGEON

Mayank

• • • मेरे पक्षी का नाम कबूतर है। यह देखने में सुन्दर है। इसका रंग सफेद और स्लेटी होता है।

इसकी गर्दन मे बैंगनी रंग होता है। यह 20-25 सेंटीमीटर का होता है। यह हमारे गाँव में बिजली की तारों पर बैठे हुए दिखाई देते है । यह गेहूं के दाने, चावल के दाने और बाजरा भी खाता है। यह अपना घोंसला घरो में बनाता है। यह गुटर-गु, गुटर-गु की आवाज़ करता है। मादा कबूतर दो अंडे देती है। इसके अंडो का रंग सफेद होता है। नर और मादा दोनों मिलकर 15 से 20 दिन तक अंडो को सेकते है। कबूतर के बच्चे 40 से 50 दिनों में उड़ना सीख जाते है। यह कबूतर ज्यादातर गुट में रहते हैं। यह जमीन पर चलते और दोड़ते हैं। यह जमीन पर दाने चुगते रहते हैं और डरने पर फड-फड़ाकर उड़ जाते हैं। इसकी चोंच छोटी और काले रंग की होती है। इसकी चोंच में छोटे-छोटे छेद होते हैं। इन छेदों में से सांस लेते हैं। इसकी आँखें गोल और लाल रंग कि होती हैं।

BEAK & CLAWS

इसके पंजे लाल होते हैं और पंजो के नाख़ून बहुत नुकीले होते हैं। इसको बहुत से लोग घरो में पालते है। जब ये बैठा होता है तब अपनी गर्दन को आगे पीछे करता है।

लिबर तोता

होशियार मिट्ठु

ROSE-RINGED PARAKEET

Naman

• • • मेरे पक्षी का नाम तोता है। मैने उसको होशियार मिट्ठु का नाम दिया है क्योंकि अगर हम उसे कुछ सिखाएँ तो वह उसे जल्दी से सीख लेता है।

वह वृक्षों पर रहता है। उसकी पीठ, सिर और पूँछ हरी होती है। उसके सिर और पैर हल्के गुलाबी रंग के होते हैं और चोंच लाल रंग की होती है। नर और मादा में फर्क उसके गले की लाल और काले रंग की पट्टी बताती है। नर तोते के गले में पट्टी होती है और मादा के गले में पट्टी नहीं होती। इस पक्षी की लंबाई 42 सेंटीमीटर तक होती है। वह फलाहारी होता है। उसकी आवाज़ चीव-चीव-चीव है। उसकी पूंछ उसके शरीर जितनी होती है। वह हमेशा गुट में रहते हैं। वह लंबी उडान लेता है।

BEAK & CLAWS

उसकी चोंच लाल और छोटी होती है और आगे से मुड़ी हुई होती है। उसकी चोंच का ऊपर वाला हिस्सा बड़ा होता है और नीचे वाला

छोटे आकार का होता है। उसकी चोंच सख्त होती है। वह अपनी चोंच से पतली डाल पर लटक सकता है। वह अपनी चोंच से खुजली भी करता है। उसकी चोंच के ऊपर वाले हिस्से में दो छेद होते है जिनसे वो साँस लेता है। उसकी चोंच इतनी मजबूत होती है की वो अपनी चौच से अखरोट को भी तोड़ सकता है।

उसके पंजे छोटे और गुलाबी रंग के होते है। इसके पंजो में चार उँगलियाँ होती है। तीन उंगली आगे की ओर एक उंगली पीछे की ओर होती है। इसके पंजो की पकड़ सख़्त होती है। वह पंजो की मदद से उल्टा लटक सकता है। वह पहले फल को अपने पंजो में पकड़ता है और फिर उसे खाता है। उसके पंजो में क़तारें होती हैं।

कठिन शब्द व उनके अर्थ

कतारे - रेखा

गुट - समूह

वृक्ष - पेड़

जलमुर्गी

घुमक्कड़ जलमुर्गी

WHITE BRESTED WATER HEN

Hanushika

• • • मेरे पक्षी का नाम WHITE BRESTED WATER HEN है। मैने उसे घुमक्कड़ जल मुर्गी का नाम दिया है क्योंकि वह सारा दिन घुमती रहती है।

यह हमारे गाँव में तलाब के किनारे झाड़ियों में और खेतो में मिलती है। इसकी आगे की गर्दन और आगे की छाती का हिस्सा सफेद रंग का होता है। कमर और पीछे के भाग का रंग काला होता है। इस का पीछे का भाग भूरे रंग का होता है। इसका आकार 25 से 30 सेंटीमीटर तक होता है। यह कीड़े, मकोड़े, छोटी मछलियां और तालाब के छोटे पौधे खाती है। यह पक्षी बारह माह हमारे गाँव में दिखती है। इसकी आँखें गोल और लाल होती हैं और आँखों के अंदर का हिस्सा काले रंग का होता है।

BEAK & CLAWS

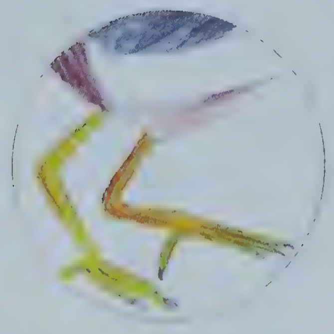

इसकी चोंच का रंग हल्का हरा और ऊपर से चोंच का आखिरी हिस्सा नारंगी रंग का होता है। इसकी चोंच आगे से नुकीली होती है। इस पक्षी

की चोंच तक़रीबन 3 से 4 सेंटीमीटर की होती है। इसकी चोंच इसे जमीन से कीड़े निकालने में और घोंसला बनाने में मदद करती है।

WHITE BRESTED WATER HEN के पंजो का रंग पीला होता है तथा उँगलियाँ पतली और लंबी होती हैं। इसके पंजो की तीन उँगलियाँ आगे की तरफ होती हैं और एक उंगली पीछे की तरफ होती है। उँगलियों के नाख़ून नुकीले और सफ़ेद रंग के होते हैं। इस पक्षी के पंजे इसे कीचड़ और जमीन पर चलने में मदद करते हैं और साथ ही इसे टहनियों पर बैठने में मदद करते हैं।

किलकिला

स्थिर पक्षी

WHITE THROATED KINGFISHER

Avish

• • • मेरे पक्षी का नाम WHITE THROATED KINGFISHER (किलकिला) है। मैने इसे स्थिर पक्षी का नाम दिया है क्योंकि ये मछली की तलाश में बहुत देर तक बैठा रहता है।

ये पक्षी 15 से 20 सेंटीमीटर के लगभग होता है। इसकी पूंछ छोटी होती है, सिर गोल और आँखें भी गोल होती हैं। सिर का रंग भूरा, आँखें काली, चोंच लाल और छाती सफेद होती है। यह निवासी पक्षी है। ये पुरे साल हमारे गाँव में रहता है। इसकी बहुत प्रजातियां होती हैं। यह पक्षी ज्यादातर तालाब के पास पाया जाता है। यह कभी झुण्ड में नहीं उड़ता। इसकी आवाज़ किलिलिली है। यह कीड़े, मछली, छिपकली और छोटे पक्षी खाता है। यह हमारे गाँव में तालाब और खेतों के पास मिलता है। यह बहुत तेजी से उड़ता है।

BEAK & CLAWS

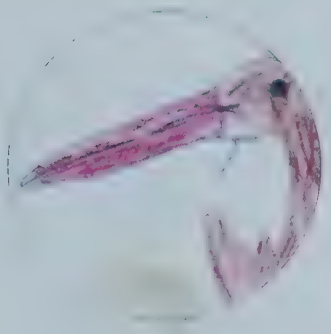

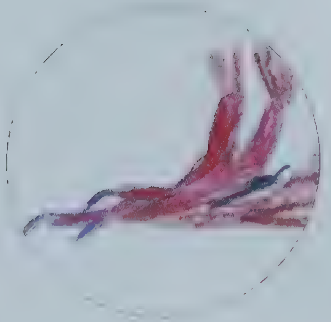

किलकिले की चोंच का रंग लाल होता है। इसकी चोंच बहुत मजबूत होती है। इसकी चोंच पीछे से चौड़ी और आगे से नुकीली होती है।

इसकी चोंच इसे उड़ने में और शिकार को पकड़ने में मदद करती है। ये अपनी चोंच से अपने शरीर पर खुजली करता है। यह अपनी चोंच की मदद से घोंसला बनाता है। यह जब पानी में गोता लगाता है तो यह बहुत जल्दी मछली पकड़ लेता है। यह अपनी चोंच की मदद से अपने शिकार को चोंच में दबोचकर इधर-उधर पटककर मारता है और फिर खाता है।

इसके पंजो का रंग महरून होता है। इसके पंजो की तीन उँगलियाँ आगे की तरफ़ और एक उंगली पीछे की तरफ होती है। जिस वजह से ये पतली-से-पतली डाली पर बैठ सकता है। जब यह उड़ता है तो इसके पंजे नहीं दिखते। किलकिले के पंजो के नाख़ून बहुत नुकीले होते हैं जिससे वो अपने शिकार को जल्दी मार सकता है।

Bird species recorded at Padha Village

01. ASHY PRINIA

02. ASIAN PIED STARLING

03. BLACK DRONGO

04. BLACK KITE

05. BLACK-RUMPED FLAMEBACK (WOODPECKER)

06. BLACK-WING-STILL

07. BROWN ROCK CHAT

08. CATTLE EGRET

09. COMMON COOT

10. COMMON HOOPOE

11. COMMON KINGFISHER

12. COMMON MOORHEN

13. COMMON MYNA

14. COMMON SANDPIPER

15. COMMON TAILORBIRD

16. COPPERSMITH BARBET

17. COTTON PYGMY GOOSE

18. EURASIAN COLLARED DOVE

19. GREATER COUCAL

20. GREEN BEE-EATER

21. GREEN SANDPIPER

22. GREY FRANCOLIN

23. GREY HERON

24. GREY HORNBILL

25. GREY-THROATED MARTIN

26. HOUSE CROW

27. HOUSE SPARROW

28. INDIAN PEAFOWL

29. INDIAN ROLLER

30. INDIAN SILVERBILL

31. INDIAN SPOT -BILLED DUCK

32. INDIAN-ROBIN

33. INTERMEDIATE EGRET

34. JUNGLE BABBLER

35. LAUGHING DOVE

36. LITTLE CORMORANT

37. LITTLE EGRET

38. LITTLE GREBE

39. LITTLE STINT

40. ORIENTAL HONEY BUZZARD

41. ORIENTAL MAGPIE ROBIN

42. PAADY FIELD PIPIT

43. PAINTED STORK

44. PIED AVOCET

45. PIED- BUSH-CHAT

46. PLAIN PRINIA

47. POND HERON

48. PURPLE SWAMPHEN

49. PURPLE-SUNBIRD

50. RED SHANK

51. RED WATTLED-LAPWING

52. RED-NAPED IBIS

53. RED-VENTED -BULBUL

54. ROCK PIGEON

55. ROSE RINGED PARAKEET

56. RUFF

57. SHIKRA

58. SIBERIAN STONECHAT

59. SINDH SPARROW

60. SPOTTED DOVE

61. SPOTTED OWLET

62. WHITE -BREASTED -WATERHEN

63. WHITE THROATED KINGFISHER

64. WHITE WAGTAIL

65. WHITE-BROWED WAGTAIL

66. WIRE -TAILED SWALLOW

67. YELLOW FOOTED GREEN PIGEON

68. YELLOW WAGTAIL

Disha India Community School is an Experiential Learning school where we use real-life experiences from the local context of the child, as a pedagogic medium for teaching the required curriculum, skills and values. The vision is to create an innovative model of school education where the community takes a shared ownership for providing quality, contextual, personalized and equal education for all children on sustainable basis. The idea is to demonstrate how a community can design its own education program based on its context, challenges, aspirations and possibilities, so that education is rooted in the local context and prepares children for a future that the community aspires for.

Disha India Community School was started in year 2020. The school is in village Padha, district Karnal, Haryana. At present, we have grades Nursery to Five and will add one grade every year. We have 125 students till grade 5 and nine educators, all from the same village. We are designing an experiential curriculum based on natural farming and local crafts as pedagogic medium for developing the required curricular goals and contextual understanding. The vision to understand and re-invent Gandhian principles of Nai-Talim in today's context.

The big idea is to create community schools in partnership with different communities across the country, where communities takes shared responsibility of providing quality, equal, contextual and personalized education for children on sustainable basis. Community schools will demonstrate how a community can design its own education program based on its context, aspirations, challenges and possibilities. Community schools will work in collaboration with local government schools to improve the quality of education in their geographical areas- the idea is to strengthen the local public education system.

The vision is to give a new direction to education in our country by demonstrating how education can be used as a transformational process by the community for bringing the desired change in the community...

Preparing children for life through life...

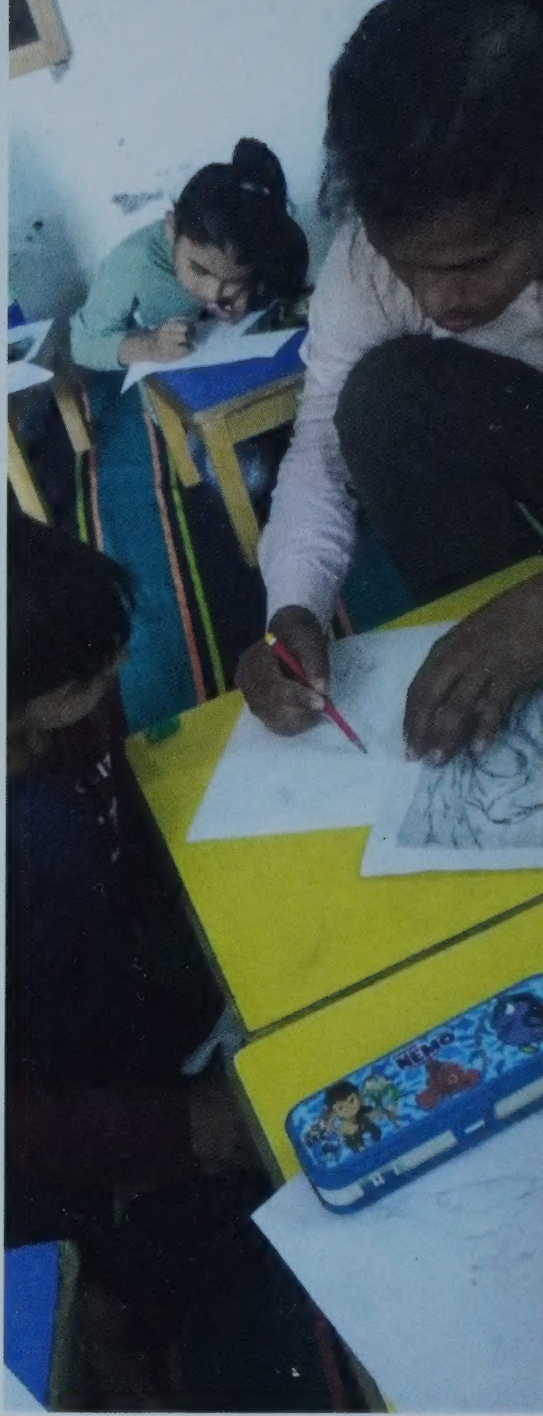

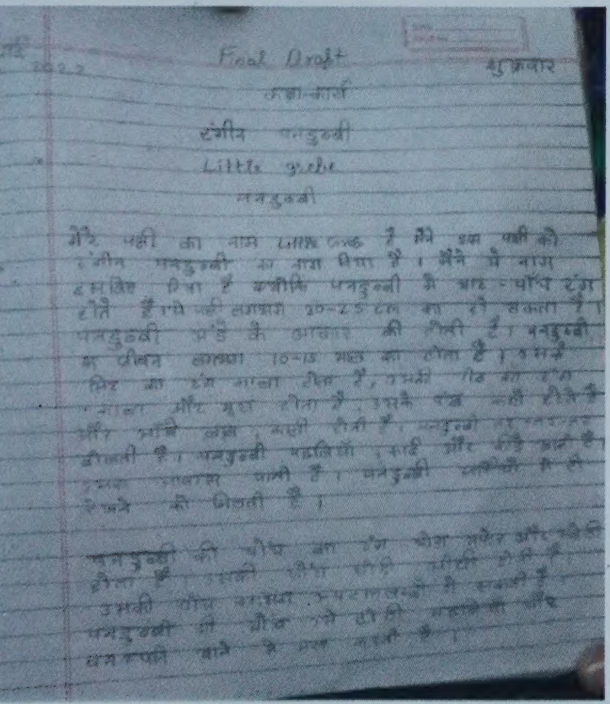
Final Draft
Little grebe

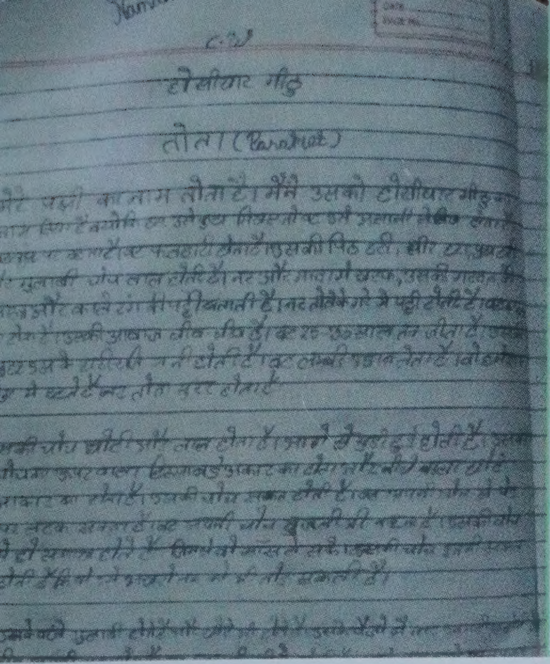
होशियार मिट्ठू
तोता (Parrot)

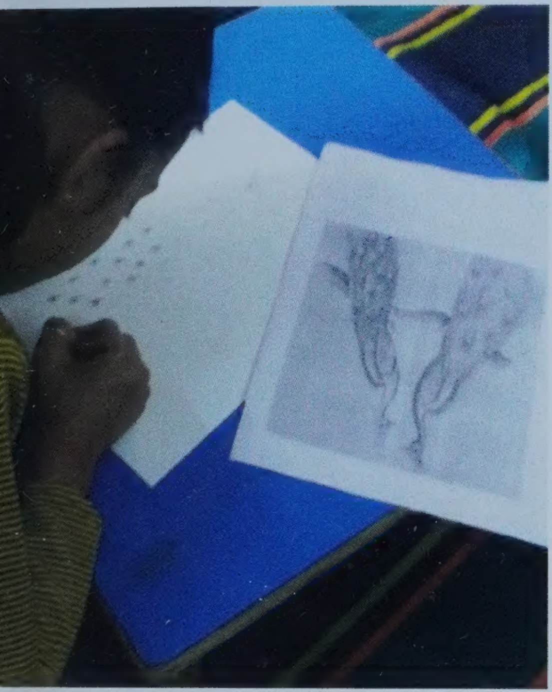

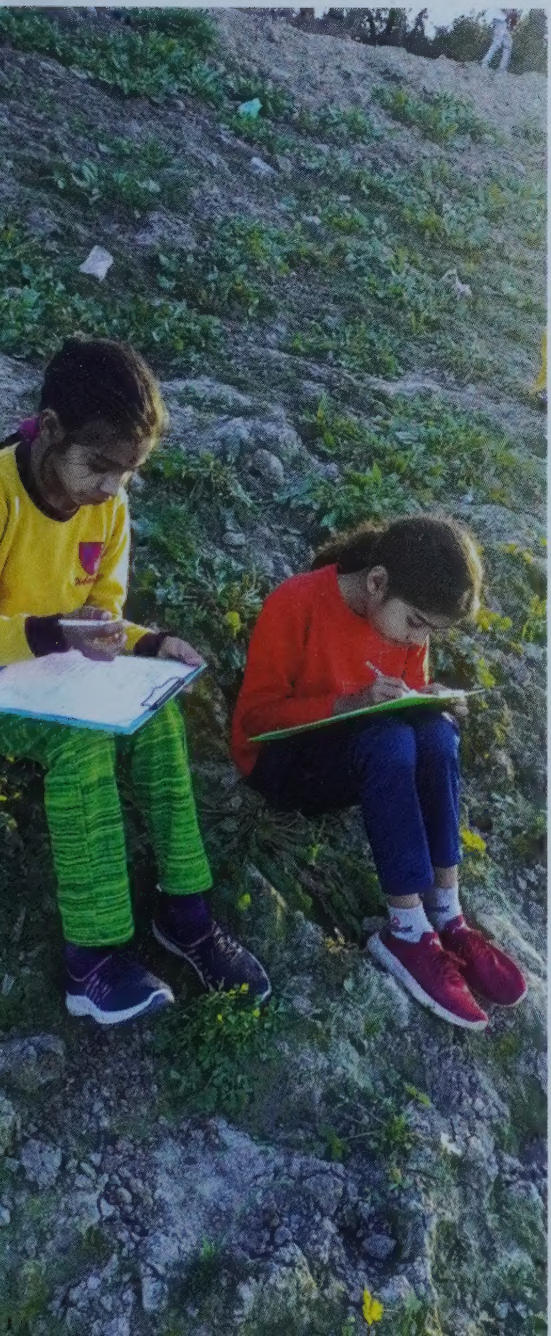

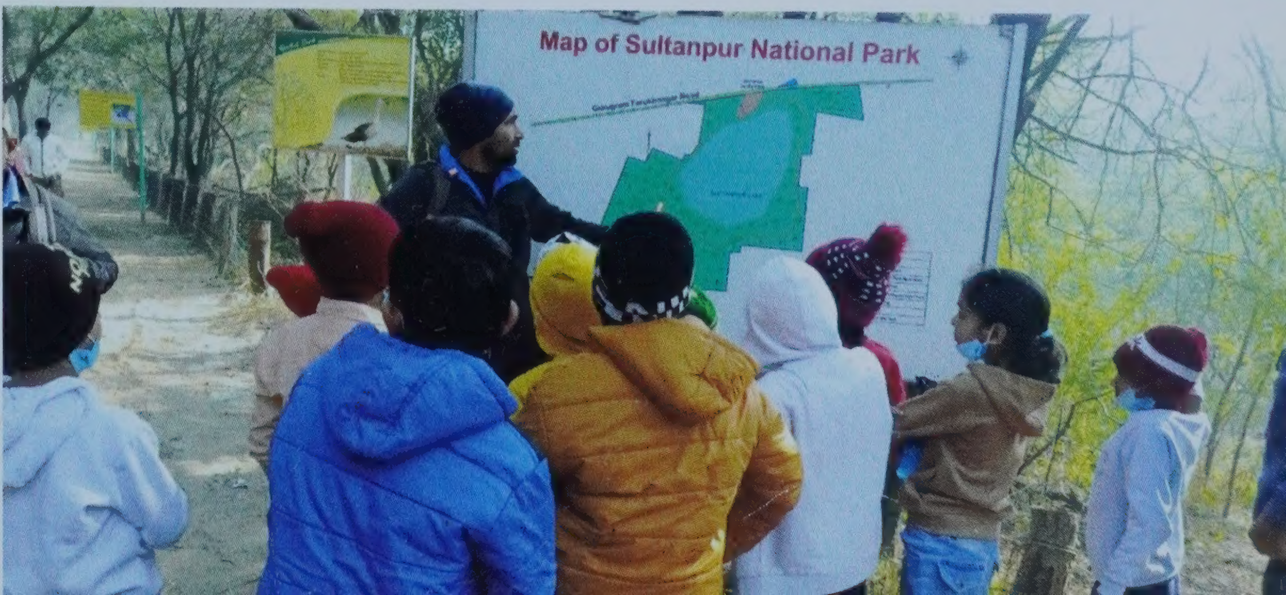
Map of Sultanpur National Park

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए पक्षी ही जरूरी हैं। पक्षी हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। हम पर्यावरण को स्वच्छ रखकर भी पक्षियों बचा सकते हैं। हमारी प्रकृति पक्षियों की वजह से चल पा रही है।

सा विद्या या विमुक्तये

disha india community school

Village Padha, Karnal, Haryana

To know more, please visit www.dishaindiaeducation.org